



HIS HOLINESS  
MAHARISHI MAHESH YOGI JI

# E-Gyan

अंक - पच्चीसवाँ Volume -25  
15 July 2011, Friday

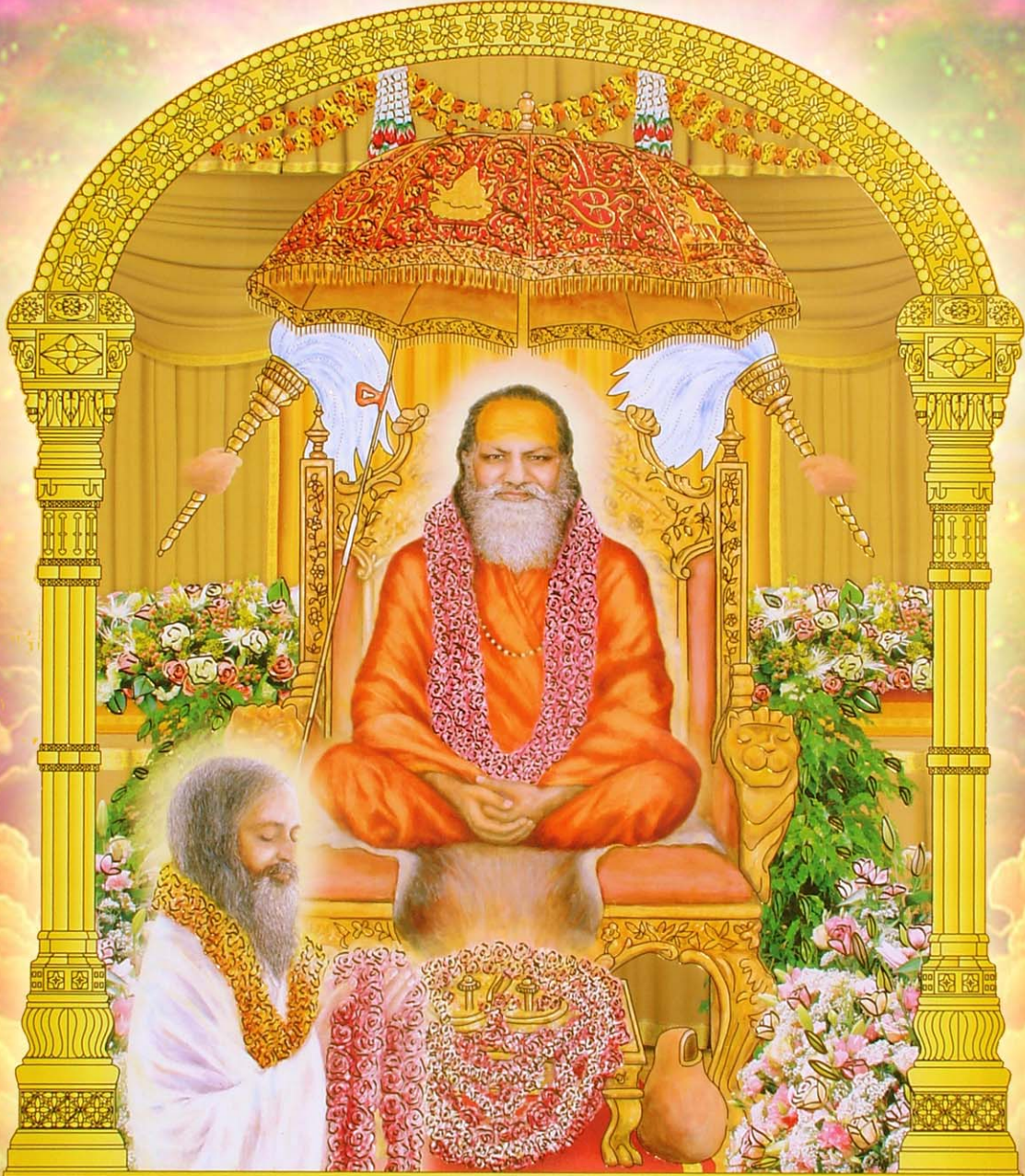
Monthly Digital News Letter of Maharishi Organisations - India

महर्षि संस्थान भारत का मासिक सूचना पत्र

महर्षि संवत्सर - ५६ विक्रम संवत्सर - २०६८ आषाढ शुक्ल पक्ष १५, शुक्रवार १५, जुलाई २०११

E-mail - [egyan@mahaemail.com](mailto:egyan@mahaemail.com) and [egyanmonthly@gmail.com](mailto:egyanmonthly@gmail.com) Web site - [www.e-gyan.net](http://www.e-gyan.net)

ACADEMIC ACHIEVEMENTS | ORGANISATIONAL EVENTS | MAHARISHI JYOTISH | CELEBRATIONS | PHOTO FEATURES | CONTACT US

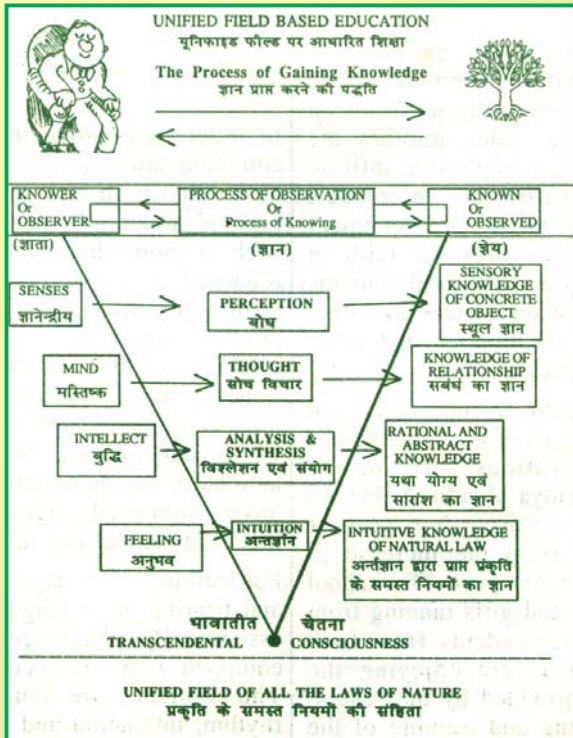


श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव २०११



## यूनिफाइड फील्ड पर आधारित शिक्षा

महर्षि जी के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया तीन श्रृंखलाओं का एक संयोजन है। ज्ञाता (ज्ञान प्राप्त करने वाला), ज्ञेय (जिसके विषय में ज्ञान प्राप्त किया जाये) एवं ज्ञान (ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया) जो कि ज्ञाता और ज्ञेय को जोड़ती है। ज्ञान प्राप्त करने की इस प्रक्रिया का सम्पूर्ण क्रम तथा ज्ञाता, ज्ञान एवं ज्ञेय के पारस्परिक सम्बन्ध का विवरण संलग्न चित्र से स्पष्ट होता है।



कल्पना कीजिये कि एक व्यक्ति (ज्ञाता), एक नीम के वृक्ष के सम्बन्ध में (ज्ञेय) ज्ञान प्राप्त कर रहा है। इस प्रक्रिया के समय उसका मानसिक स्तर कार्यरत है तथा वह अपने इस स्तर के अनुसार ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है। उदाहरण स्वरूप जब व्यक्ति, ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर बोध के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है तो उसके ज्ञान का स्तर "स्थूल ज्ञान" होता है। व्यक्ति नीम के वृक्ष को मात्र वृक्ष ही समझता है। दूसरी अवस्था में जब व्यक्ति का मानसिक स्तर मस्तिष्क के क्षेत्र में होता है तो वह सोच-विचार के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है। इस अवस्था में उसका ज्ञान "सम्बन्धित ज्ञान" कहलाता है, जिसके द्वारा वह ज्ञेय को उसके प्राकृतिक वर्गीकरण के आधार पर अलग से अवलोकन करता है। इस अवस्था में वह नीम के वृक्ष को नीम का वृक्ष ही कहता है एवम् मस्तिष्क के उपयोग से तथा ज्ञान की परिधि की वृद्धि से वह इसी अवस्था में नीम के वृक्ष को "भेषज युक्त नीम का वृक्ष" कहता है। इससे

स्पष्ट होता है कि अब उसका मानसिक स्तर उस वृक्ष की उपयोगिता तक जा पहुँचा है। ज्ञान प्राप्त करने की तीसरी अवस्था में व्यक्ति, बुद्धि द्वारा विश्लेषण एवं संश्लेषण के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार प्राप्त किया गया ज्ञान यथोचित एवं सारांश का ज्ञान कहलाता है। इस अवस्था में व्यक्ति वृक्ष और प्रकृति द्वारा प्रदत्त समस्त शक्तियों का अनुभव करता है साथ ही स्वयं एवं वृक्ष में तादात्म्य का भी अनुभव करता है। ज्ञान प्राप्त करने का जो चरमोत्कर्ष है वो है अनुभव। अनुभव के द्वारा एवं अन्तर्ज्ञान के माध्यम से प्राप्त ज्ञान प्रकृति के समस्त नियमों का संहिता रूपी ज्ञान होता है। इस अवस्था में व्यक्ति "अहं ब्रह्मास्मि" के स्तर को प्राप्त करता है और व्यक्ति को अपनी चेतना में विश्व ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण रचनाओं का एकीकृत अनुभव होता है।

परम्पराओं से शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क के गहन एवं अंतिम सतह तक ज्ञान को प्राप्त करना रहा है। जब व्यक्ति में मस्तिष्क का सर्वाधिक गूढ़ तथ्य (एकीकृत क्षेत्र) जागृत रहता है, तो प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण रचनात्मक शक्ति एवं पूर्ण जागृत अवस्था में रहता है। इस अवस्था में व्यक्ति की चेतना का स्तर भावातीत चेतना होती है, जो प्रकृति प्रदत्त समस्त नियमों का एकीकृत क्षेत्र है।

भारत वर्ष के वेद विज्ञान में इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया आदिकाल से चली आ रही है परन्तु दुर्भाग्यवश आज के परिवेश में जो शिक्षा प्रणाली प्रचलित है, उसमें इस प्रकार की शिक्षा अनुपलब्ध है, परिणामतः हमारे विद्यार्थी साधारणतया स्थूल ज्ञान के क्षेत्र में ही विचरते रहते हैं। महर्षि महेश योगी जी के अनुसार हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने विद्यालयों में औपचारिकता एवं कक्षा प्रणाली को तो प्रतिष्ठित किया परन्तु विद्यार्थियों की रचनात्मक शक्ति को जागृत करने की प्रणाली एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्तर को उन्नति की ओर अग्रसर होने हेतु किसी भी प्रणाली पर ध्यान नहीं दिया। अनुसंधान द्वारा यह ज्ञात हुआ कि महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में सृजनशील एवं बुद्धिमान स्नातक वही हैं जो अपने प्रारंभिक शिक्षण में भी सृजनशील एवं बुद्धिमान रह चुके हैं। दुर्भाग्यवश वह विद्यार्थी जिनमें यह सृजनशीलता या बौद्धिक विकास अपने प्रारंभिक शिक्षण में नहीं होता, स्नातकोत्तर उपाधि के उपरान्त भी उनमें इनका अभाव प्रतीत होता है। किसी भी शिक्षा पद्धति में मनुष्य के आदर्श एवं कर्तव्य को उदाहरण मानकर प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। फलस्वरूप व्यक्ति के शिक्षण के क्षेत्र में एक अवरोध सदैव के लिये विद्यमान हो जाता है। व्यक्ति सदैव उसे क्या होना चाहिये, एवं वह क्या है इसी अन्तर्द्वन्द में विचरण करता है। महर्षि जी कहते हैं—इस चक्रव्यूह से निर्लिप्त होने का एकमात्र उपाय है शिक्षा को शिक्षक, माता—पिता एवं पाठ पर ही निर्भर न किया जाए। विद्यार्थियों को उनके स्वनिहित अनन्त क्रियाशक्ति एवं रचनात्मक शक्ति को जागृत कराके इस मानसिक अन्तर्द्वन्द से स्वतः निर्लिप्त होना होगा।

विद्यार्थी जब तक अनुशासन, स्फूर्ति एवं रचनात्मकता तथा आन्तरिक भावना की उत्पत्ति करने वाले वातावरण में अग्रसर नहीं होगा तब तक उनके जीवन में पूर्णता की कमी सदैव बनी रहेगी एवं अपूर्ण जीवन में वे रचनात्मकता एवं सम्बद्धता की कमी सदैव अनुभव करेंगे।

महर्षि जी द्वारा प्रणीत भावतीत ध्यान एवं उनसे सम्बन्धित अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से व्यक्ति इन्हीं तथ्यों के गूढ़ विश्लेषण से अपने जीवन को सम्पूर्ण बनाने में सक्षम हो सकता है।

“ई-ज्ञान”

सम्पादक मण्डल

## Achievements of Maharishi Vidya Mandir Schools

### Academic Achievements - Academic Year 2010-2011

#### MVM Bawal

#### Best Performance of MVM Bawal (Haryana)

- MVM Bawal has secured 100% result in class 10<sup>th</sup> & 12<sup>th</sup> examination and all students got 1<sup>st</sup> division. 12 students have secured 9/10 points & three students have secured 10/10 points.

#### MVM Chhatarpur

#### Academic Achievement Class XII

Total 61 students of MVM Chhatarpur secured 1st division marks and 23 students have got more than 75% marks in class XII examination.

#### Name of Meritorious Students:

(a)	Shantanu Rawat	-	91.4%
(b)	Vaishnavi Agrawal	-	91.2%
(c)	Shubham Jain	-	87.8%

#### MVM Silchar

#### Academic Achievement Class XII

Name of the Stream	No. Students appeared	No. of Students Passed
Science	40	40
Humanities	7	7
Commerce	16	16

#### Name of Meritorious Students:

Name of the Toppers	Name of the Stream	Percentage
Arnab Purkayastha	Science	91.20%

#### Subject wise (80% marks and above)

Name of the Subjects	No. of students getting 80% or above	Highest marks
English	17	94
Mathematics	13	100
Chemistry	11	94

Physics	6	96
Biology	9	89
Computer Science	7	96
History	1	85
Political Science	2	90
Geography	3	88

**MVM Guwahati - IV****Academic Achievements - Class-XII**

Total No of Students Appeared	:	112
Total No of Students Passed	:	112
Pass Percentage	:	100%

Students secured above 90% marks	:	11 Students
Students secured above 85% marks	:	50 Students

**Highest Marks (Subject wise)**

Subject	Highest Marks
Chemistry	99
Physical Education	99
Maths	98
Biology	96
Inf. Practice	96
English	95
Physics	95
Accountancy	95
Entrepreneurship	95
Economics	95
Geography	95
Pol. Science	92
Sociology	81

**MVM Aligarh Main****Academic Achievement Class X**

Total No. of Grades	Total No. of Division	Subjectwise % of Result	
A 1 – 09	1 <sup>st</sup> Divisions – 111	Hindi	- 100.00 %
A 2 – 12		Introductory I. T.	- 100.00 %
		Sanskrit	- 100.00 %
		Maths	- 100.00 %
		Social Science	- 99.40 %
		Science	- 99.40 %
		English	- 98.80 %

**Name of Meritorious Students:**

S.n.	Name	Grade Point	Rank
1.	Kavya Mishra	10	I
2.	Pooja Sikarwar	9.8	II
3.	Ishank Varshney	9.8	II
4.	Sukanya Saraswat	9.6	III

**Subject wise Toppers**

<b>Hindi</b>	A 1 –	Hemant Sengar, Ishank Varshney, Kavya Mishra, Monika Gupta, Shrutika Sharma, Sukanya Saraswat, Diksha Bansal, Kuldeep Singh, Prachee Saxena, Tammana Gupta, Neelisha Varshney, Shubham Varshney
<b>Maths</b>	A 1 –	Hemant Sengar, Ishank Varshney, Kavya Mishra, Pooja Sikarwar, Sukanya Saraswat
<b>Social Science</b>	A 1 –	Harsh Singh Chauhan, Kavya Mishra, Pooja Sikarwar, Diksha Bansal, Kuldeep Singh
<b>Science</b>	A 1 –	Ishank Varshney, Kavya Mishra, Pooja Sikarwar, Shrutika Sharma, Sukanya Saraswat, Shashank Varshney

**MVM Sagar**

Ishank Varshney, Kavya Mishra, Pooja Sikarwar

**Name of Meritorious Students:****Class 10<sup>th</sup> Examination**

1. Somya Samaiya	-	10	4. Satyam Nayak	-	9.6
2. Soma Chourasia	-	9.6	5. Surbhi Jain	-	9.4
3. Sristhi Jain	-	9.6			

**Class XII Examination****Name of Meritorious Students:**

1. Palak Singhai	-	93.4%
2. Divya Khann	-	91.8%
3. Noopur Agrawal	-	87.2%

**MVM Bageshwar****Academic Achievement Class XII****Name of Meritorious Students:**

1. Lokesh Pant	-	90.02%
2. Akansha	-	87.06%
3. Hansa Pandey	-	86.04%

**MVM Bilaspur-I****Academic Achievement Class XII****Name of Meritorious Students:**

1. Ankit Rathore	-	94.4%
2. Naman Kashyap	-	88.2%
3. Kritika Jalan	-	86.2%

**Academic Achievement Class X****Students who secured CGPA 10 out of 10**

- (a) Chinmoy Lahure
- (b) Neeraj Kumar
- (c) Shriya Dubey
- (d) Shubham Kumar Sahu
- (e) Siddharth Sahu
- (f) Vijay Laxmi Tripathi

**MVM Gonda****Academic Achievement Class X****Name of Meritorious Students:****Grade Points**

1. Stuti Shrivastava	-	9.6 CGPA Marks
2. Vikas Verma	-	9.6 CGPA Marks
3. Vishal Tiwari	-	9.4 CGPA Marks
4. Aditya Mishra	-	9.4 CGPA Marks
5. Ayush Tripathi	-	9.0 CGPA Marks



## MVM Raipur - 1

Maharishi Vidya Mandir Raipur-1 achieved **100% results in the CBSE EXAM 2011 for Class X**. There were total **172** students appeared in class X examination and all of them passed. **4 students secured 100% (CGPA 10.0), 126 student got First Division (CGPA More than 6.0). 45 students got more than 80% (CGPA More than 8.0).**

### List of Meritorious Students: Grade Points

1. Anshuman Pradhan	-	10.0
2. Kritika Dewangan	-	10.0
3. Pooja Gupta	-	10.0
4. Tanvi Kadwe	-	10.0
5. Veenal Bansal	-	9.8
6. Vishesh Singh Thakur	-	9.6
7. Shubham Jha	-	9.6
8. Payal Chandravanshi	-	9.6
9. Hitesh Mehra	-	9.6
10. Abhishek Choudhary	-	9.6
11. Garima Jain	-	9.4
12. Rashi Agrawal	-	9.4
13. Manisha Kothari	-	9.2
14. Jyoti Biswal	-	9.2
15. Shivangi Dubey	-	9.0
16. Kunal Bodhankar	-	9.0

## MVM Kotdwar



Pramod Kumar Tripathi.

International Institute of Education & Management, a well-known organisation has organised a National Seminar on “Education & Economic Development” on 9 June 2011 at New Delhi. On this occasion, the institute has honoured eminent men and women of high repute and having outstanding achievements in their respective fields with “Best Education Award”.

The function was attended by Ministers of Central Government, Educationists, Intellectuals and Leaders of Business and Industry from all over India.

Mr. Pramod Kumar Tripathi, Principal MVM Kotdwar, has been nominated for “Best Education Award” and has received a “Certificate of Excellence” for his outstanding achievements and remarkable role in the field of education.



## MVM-1 Guwahati



1- Maharishi Vidya Mandir-1 Guwahati has received a grant of Rs. 5000/- from Govt. of India for the project “Conservation of Bio-diversity under National Environment Awareness Campaign”. School has conducted different programmes like extempore speech, quiz, poster making competition and plantation programme.



2- Master Prachurya Baruah of class VIII has received trophy from Hon'ble Chief Minister of Assam Shri Tarun Gogoi. Master Prachurya stood 1<sup>st</sup> position in Drawing/Painting competition held on 4<sup>th</sup> June 2011 on the occasion of World Environment Day organised by Pollution Control Board, Govt. of Assam.

Prachurya Baruah also bagged the 1<sup>st</sup> position and received Rs.7000/- in a State Level Art Competition 2011 as a part of the event NISKA organised by IRADO (Integrated Rural Artisans Development Organisation on the occasion of

World Environment Day. He again secured 1<sup>st</sup> rank in senior group all Guwahati Postal Drawing Competition, 2011 organised by Paresh Baishya Foundation on 28<sup>th</sup> May 2011.

3- Education Exchange Programmes have always facilitated cultural exchange between teachers and students belonging to different communities. To promote Educational and Cultural exchange two International teachers Mrs. Sandra Chando and Mrs. Kenena Pelfrey from United State of America have come to MVM Silpukhuri, Guwahati for a period of two weeks from 24<sup>th</sup> May 2011 to 7<sup>th</sup> June 2011 under the Teachers Achievement and Excellence programme of the US State Department and International Research and Exchange Programme. In Educational & Culture Exchange Programme Mrs. Mrinali Choudhury has been selected by the US Department of State Bureau of Educational and Cultural Affairs to teach and study at the US University on a six month Fulbright Fellowship Programme.



Mrs. Kenena Pelfrey (left) and Mrs. Sandra Chando (right)

## FOURTH STATE OF CONSCIOUSNESS – TRANSCENDENTAL CONSCIOUSNESS



Maj. Gen. Dr. Kulwant Singh (Retd.)  
Minister of Invincible Defence-Maharishi Global Country of World Peace  
Director General-Maharishi Invincible Defence Programme-India

We are familiar with three states of consciousness – waking, sleeping and dreaming, each one with its own physiological variation. The main difference in these states is the degree of consciousness of mind, and the change each state incorporates in the physiology. In the sleeping state, the mind is totally, without knowledge and awareness of any kind; in the dreaming state, there is foggy knowledge and imaginary perception; in the waking state, the mind is fully awake, alert and coherent, all senses are fully functional. Obviously, waking state is generally known to be the most superior as far as alertness of mind and other faculty of human physiology is concerned. Despite all this the waking state has serious limitations – the attention is totally outward, what we see and what our senses perceive. What is missing is the inner self of mind's functioning and the finer level of nature's functioning, which neither can be seen nor felt by the outwardly senses.

In 1970, Dr Robert Keith Wallace, one of the greatest scientists of Neurophysiology, researched on the fourth state of consciousness and proved that this fourth state has its own physiological parameters, different than the three known state of consciousness. In the fourth state, the mind is fully alert and awake within itself, but without a thought, where as, the body is at complete and deep rest; it is also called the state of "Restful Alertness". The ancient Indian seers knew of this state and referred to it as "Samadhi", which in practical language means, a state where mind does not waver. Maharishi Ji enlightened the world to reach this state through the subjective approach of Vedic Technology of Transcendental Meditation, simple and easy way to experience the bliss of the Fourth State of Consciousness – Transcendental Consciousness.

During the TM technique, we experience Transcendental Consciousness (Unified Field - the home of all the laws in nature) at the quietest level of mind. In simple terms, the fourth state of consciousness - state of pure consciousness is the state of 'settled mind', It is the state of 'least excited state of consciousness'; this is the field of maximum energy, creativity, and intelligence; the mind naturally experiences more of these qualities. With regular practice of TM, we contact the Unified Field on regular basis, our daily life becomes infused with Transcendental Consciousness and we live life in accord with Natural Law, harnessing the qualities of creativity, energy and intelligence.

Since the mind and body are intimately connected, as the mind settles down, the body also settles down to deep rest. In the fourth state of consciousness, even though the body is in deep state of rest, the mind is alert rather than sleep, indicated by an abundant increase of Alpha waves in the EEG. It is obvious that this state differs in totality from the three states of consciousness, due to major variations

and the changes this state brings in the human physiology, and above all, the superiority in the level of consciousness.

Maharishi Ji tells us that in the fourth state, mind is ‘awake within itself’, yet there are no thoughts in the awareness – neither imaginary creation of dreams nor the more common thoughts of the waking state; it is like a lamp which does not flicker in a windless place. He further explains that the world must enjoy the full dignity of life, which can only be done on the basis of the fourth state of consciousness. Describing the fourth state in commentary in Bhagwat Gita, Maharishi Ji says –”there is no trace of sensory activity, no trace of mental activity”.

The objective means of modern science have no way to reach the fourth state of consciousness; therefore, they remain ignorant to the experience and joys of reaching Transcendental Consciousness, where mind automatically identifies itself with the nature and Unified Field, the source of all creation. By intellectual understanding or by reading and learning alone, one cannot experience the fourth state of consciousness. The only way is Vedic subjective approach of TM and TM-Sidhi and Yogic flying practices; only by learning these techniques from a qualified teacher, one can reach this blissful state.

**Jai Guru Dev**

---

---



## Unified Field

### Overview of Maharishi Ji's Theory of Education

---

---

A few fundamental principles form Maharishi Ji's approach to education. These ideas are briefly introduced below.

#### **1. The creative potential of the mind is unlimited, having its source in the field of pure consciousness.**

Maharishi Ji explained that the thoughts and feelings of the conscious mind are limited expressions of vast unbounded reservoir of creative potential at the basis of all thought. The basis of thought he explained is the field of pure consciousness or pure Intelligence – the most fundamental level of existence in man and nature. Only by experiencing pure consciousness can individuals use their full mental and physical potential in daily life. “As long as that basic field of creative intelligence does not come to the consciousness level of the mind, life does not become as strong or as powerful as its capacity to be”.

#### **2. The field of pure consciousness is the unified field of natural law.**

Progress in quantum physics during the past forty years as led to theories that describe the complete unification of all particles and forces of nature in a single unified field. Physicists characterize the unified field as self –interacting, self –sufficient, and infinitely dynamic, creating from within itself all the laws of nature governing the universe. These and other characteristics have led Maharishi Ji and prominent unified field theorists to conclude that the unified field being investigated today by modern science is the same field known by Vedic science for thousands of year Science describes the unified field as the unmanifest, unchanging basis of all subjective and objective existence, a field of infinite creativity and intelligence containing all the laws of nature in “seed” form.

*Maharishi Ji has described the unified field as the concentrated sources of all the innumerable qualities in the universe that guide life in a progressive and evolutionary direction.*

#### **3. The unified field, or pure consciousness, can be experienced through the practice of the Maharishi Technology of the Unified Field, which includes the Transcendental Meditation and TM-Sidhi programme.**

Transcendental Meditation (TM) is an easily learned, natural technique during which the individual experiences the unified field of natural law in his own awareness as transcendental consciousness. As *Maharishi Ji explained*; In Transcendental Meditation, the conscious mind comes to the simplest form of human awareness where consciousness is open to itself. This self-referral state of consciousness is the unified field of natural law.

The TM-Sidhi programme is an advanced practice of the Maharishi Technology of the Unified Field. This programme trains individuals to think and act while their awareness is established at the level of the unified field; it greatly enhances the coordination between mind and body and the ability to fulfill one's desires.

---

**4. As the individual repeatedly experiences transcendental consciousness, the functioning of the entire nervous system becomes more integrated and efficient, leading to improved mental abilities, health, and social behavior.**

Through the regular practice of Transcendental Meditation for 15-20 minutes twice daily, the infinite creativity and perfect orderliness of the unified-field becomes increasingly lively in daily life. At the same time, the TM technique gives deep rest and releases stresses that impede optimal functioning of mind, body, and behavior.

Over 600 scientific research studies conducted in the past 40 years confirm that the Maharishi Technology of the Unified Field benefits physiological, psychological, and sociological development.

**5. Continued practice of the Maharishi's Technology of the Unified Field develops higher states of consciousness in which one enjoys a permanent state while spontaneously benefiting oneself and society.**

According to Maharishi Ji, when transcendental consciousness is experienced as a continuous reality along with waking, dreaming and sleeping, individuals spontaneously use the full potential of the mind, easily accomplishing their goals without damaging themselves or the environment. Maharishi Ji explained that this capacity is inherent in the human nervous system. "The structure of life is complete, that completeness has only to be lived. And this is the goal of education, to make the individual be at least what he is – total life".

**6. Practice of this technology in large groups creates an influence of coherence and positivity in the whole society, reducing negative trends and improving the quality of life.**

Research has repeatedly shown that when the Maharishi Technology of the Unified Field is practiced in one place by a relatively small group of people – on the order of the square root of one percent of a population – crime, accidents, sickness, violence, and other negative trends in society decrease, and positive trends, such as economic vitality increase. This finding, which has been replicated many times worldwide, has practical significance for educational institutions. Any school or university of sufficient size can be a source of coherence and harmony for the nation as a whole, and if the group is large enough, for the whole world.

*The structure of life is complete, that completeness has only to be lived. And this is the goal of education, to make the individual be at least what he is – total life.*

Maharishi Ji has summarised the results of using the knowledge and technology of the unified field in education:

"The creative genius of the student blossoms as his awareness is identified more and more fully with the unified field of all the laws of nature. Instinctively his thoughts are right; he does not make mistakes, his behavior is spontaneously evolutionary. He grows in ideal citizenship – the ability to fulfill his own interest and promote the interests of society simultaneously. The natural simplicity of his life radiates the dignity of higher states of consciousness."

सत्यमेव जयते

*Satyameva jayate*

Truth alone triumphs

(Mundaka Upanishad, 3.1.6)

### Understanding the Verse:

The deepest, most eternal truth is the transcendent reality of life, which Maharishi Ji has given us access to through his Vedic Science and Technology. The children can understand that contacting the field of the transcendence daily in our practice of Transcendental Meditation programme naturally creates greater truth in all the inner and outer expressions of our lives- our feelings, our thoughts, our speech and our activities. This is life in growing attunement with natural law. The children's actions are more successful on this truthful basis- they are triumphant.

We can introduce the children to the concept of *truth* as that which is non-changing and eternal. This can be brought out through concrete example from their everyday consistency of natural law when they observe how order and growth is constant in their own life and in the world around them. They know the truth of their mother's love that is always there to nourish and guide them. (These concepts can also be related to the SCI principles above which they have studied previously.) The meaning of this social behavior being truthful with themselves and with others leads to more nourishing relationships. Knowing the true value of life allows us to live fullness of life.

समानी व आकुतिः समाना हृदयानि वः ।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥

*samani va akutih samana hrdayani vah*

*samanamastu vo mano yatha vah susahasati*

United be your purpose, harmonious be your feelings, collected be your mind in the same way as all the various aspects of the universe exist in togetherness, wholeness.

### Understanding the Verse:

The wholeness of life can be seen by the children on various levels of creation. On the physical level, everything is made up of atoms and molecules, which all arise from the same unified field. On the social level, there are different cultures throughout the world, but we are all human beings living together on the same planet. On the environmental level, plants and animals function together harmoniously through the universal laws of nature and instincts that maintain their existence. Nature's fundamental structure is perfect in its togetherness, in its wholeness.

We understand from Maharishi Ji that our own lives become aligned with natural law as we develop our consciousness through practice of Transcendental Meditation programme. Our purpose naturally becomes united with the purpose of nature, our feelings spontaneously become harmonious, and our minds become settled and peaceful, so that all our thoughts, speech, and action produce bliss and fulfillment.

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत ।

*Agnih purvebhirrsibhiridyo nutanairuta*

The Ved was honored by the ancient rishis in their consciousness and also by the rishi's in the present.

(Rig-Ved, 1.1.2)



**Understanding the Verse:**

The Ved is knowledge of the totality of life. A rishi is one who knows, on the level of his own experience, the truest and fullest reality. This verse beautifully brings out the eternal nature of the precious knowledge of the Holy Tradition. This is very appropriate to emphasize during this precious time in the students' lives when they are being instructed in Transcendental Meditation Programme. This verse gives the children the vision of their own intimate personal connection to the great rishis of the Holy Tradition and to Maharishi Ji and Sri Guru Dev. They see that they are actually becoming rishis as they grow to higher states of consciousness. Knowledge is structured in consciousness, and as they grow in consciousness, the full knowledge of the Ved awakens within them. Seeing the greatness of their position among the wisest sages of old, they are inspired and prepared to assume their role as leaders for Heaven on Earth.

**ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा ।**

***Gyana-vigyna-traptatma***  
**Knowledge and experience bring contentment**

*(Bhagavad-Gita,6.8)*

**Understanding the Verse:**

This verse brings out the sweet result of balanced growth of knowledge and experience. It is only when both these aspects of knowledge are complete that life becomes free from doubts, restlessness and suffering becomes naturally established in contentment and joy. Maharishi Ji has often explained that knowledge and experience are necessary for enlightenment. Maharishi Vidya Mandir School students are very fortunate to have a perfect balance of knowledge and experience structured into their daily classroom routine. Through their practice of Transcendental Meditation programme, they have the direct experience of pure consciousness, the state of knowingness or pure knowledge. Maharishi's Vedic Science and SCI, they gain intellectual knowledge of their own development of consciousness and of the most universal truths of life. The result, as they grow, is a security and satisfaction within themselves that can only lead to a state of contentment. If this balance of knowledge and experience is maintained throughout the many changes of the children's growth from childhood to adulthood, their growth will be smooth and easy, creating a life of bliss and fastest progress to enlightenment.

**वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः**

***vasyatmana tu yatata shakyo vaptum upayatah***

**Yog can be gained through proper means by the man of endeavor who is disciplined**

*(Bhagavad-Gita, 6.36)*

**Understanding the Verse:**

In this verse, Lord Krishna brings out the principle of success in yoga: the need of discipline in life. Maharishi points out that it is not necessary to strain in order to keep life disciplined. He gives the example of two ways of disciplining a dog. One way is to catch the dog and tie it so it will stay in one place. The other way is to put some food outside the door and leave the dog to go anywhere it likes. It will be found at the dog enjoying the food. This is a simple way of gaining control over the dog without controlling it forcibly. Similarly, if we want to discipline the mind, we can utilize its natural tendency to spontaneously move in the direction of greater happiness through Transcendental Meditation programme. All the children who endeavor to be regular in their daily routine spontaneously find themselves growing in the truth of this verse.

**"E-Gyan"**  
**Editorial Board**

# महर्षि ज्योतिष की दृष्टि में जुलाई माह



पण्डित हरिशरण मिश्र, (ज्योतिषाचार्य)

जुलाई माह आषाढ़ कृष्ण अमावस्या दिन शुक्रवार से प्रारम्भ होकर श्रावण शुक्ल प्रतिपदा दिन रविवार पर्यन्त रहेगा। इस माह में पड़ने वाले विशिष्ट व्रत पर्व एवं त्यौहार निम्नांकित हैं:-

**१. रथ यात्रा द्वितीया** - आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (03 जुलाई 2011) को जगन्नाथ पुरी में जगन्नाथ भगवान् की रथ यात्रा निकाली जाती है। जगन्नाथपुरी में जगन्नाथ भगवान् का बहुत ही भव्य और विशाल मंदिर है। यहाँ की विशेषता यह है कि इस मंदिर में भगवान् श्री कृष्ण के साथ राधा जी नहीं है बल्कि उनकी बहिन सुभद्रा जी और भाई बलराम जी की मूर्ति स्थित है, और इन तीनों मूर्तियों की संयुक्त रूप से आराधना की जाती है। इन्हीं तीनों मूर्तियों को वर्ष में एक बार आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को मंदिर से बाहर रथ में आरोपित कर नगर भ्रमण कराते हुये श्री लक्ष्मी जी के यहाँ तीन दिन तक रखा जाता है। जब बहिन सुभद्रा और भाई बलराम के साथ भगवान् रथ पर आरूढ़ हो जाते हैं तब इस रथ को मंदिर के सिंह द्वार से लगभग चार हजार से अधिक संख्या में लोग हाथ से खींचते हुये नगर भ्रमण कराते हैं। इस दिन यहाँ अद्वितीय उत्सव मनाया जाता है। देश-देशान्तर से लाखों नर-नारी एकत्र होकर इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं। विशेषता यह है कि इस दिन कोई भी व्यक्ति किसी भी जाति का भगवान् के रथ के रस्से को खींचने में सहयोग दे सकता है।

**२. विष्णु शयनी एकादशी आषाढ़ शुक्ल एकादशी** (11 जुलाई 2011) को देव शयनी या विष्णु शयनी एकादशी कहते हैं। पुराणों में उल्लेख आया है कि इस दिन से भगवान् विष्णु चार माह तक पाताल लोक में निवास करते हैं और कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी को वहाँ से विष्णु लोक के लिये प्रस्थान कर जाते हैं। इसी लिये कार्तिक शुक्ल एकादशी को देवोत्थायिनी एकादशी भी कहते हैं। आषाढ़ मास से कार्तिक माह तक के समय को चातुर्मास कहते हैं। इन चार महीनों में भगवान् विष्णु शेष शस्या पर शयन करते हैं। इसलिये इन चार महीनों में विवाहादिक शुभ कार्य करना वर्जित है। इन दिनों में साधु सन्यासी लोग एक स्थान पर रहकर तपस्या करते हैं।

**३. गुरुपूर्णिमा ( व्यास पूर्णिमा ) आषाढ़ मास** (15 जुलाई 2011) की पूर्णिमा को गुरुपूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन गुरु की पूजा की जाती है। पूरे भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में यह पर्व बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ मनाया जाता है। व्यास ऋषि जो चारों वेदों के विभागकर्ता थे, आज के दिन उनकी पूजा की जाती है। हमें वेदों का ज्ञान देने वाले व्यास जी ही थे। अतः वे हमारे आदि गुरु हुये। उनकी स्मृति को बनाये रखने के लिये हमें अपने-अपने गुरुओं को, जो कि वस्तुतः उनके (व्यास जी) ही अंश हैं ऐसा समझ कर उनकी पूजा करनी चाहिये।

इस दिन प्रातः काल स्नान पूजादिक नित्य कर्मों से निवृत्त होकर उत्तम और शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु के आश्रम में जाना चाहिये उन्हें उच्चासन पर बैठाल कर अक्षत, चन्दन से तिलक कर वस्त्र, पुष्प माला तथा फल अर्पण कर यथा शक्ति दक्षिणा प्रदान करनी चाहिये। इस प्रकार श्रद्धा पूर्वक पूजन करने के बाद गुरुवन्दना करके आशीर्वाद लेना चाहिये। गुरु के आशीर्वाद से अज्ञानान्धकार दूर होता है। विद्या की सिद्धि और सफलता

भी बिना गुरु के आशिर्वाद के सम्भव नहीं है।

**४. नित्य नैमित्तिक पार्थिवार्चन प्रारम्भ ( १६ जुलाई २०११ ) श्रावण कृष्ण पक्ष** प्रतिपदा से प्रारम्भ कर कुछ भक्त पूरे श्रावण मास पर्यन्त शिव जी की विशेष पूजा और व्रत करते हैं। शिव जी, मातेश्वरी पार्वती, गणेश जी, कार्तिकेय और शिव वाहन नन्दी की सयुंक्त रूप से पूजा करने का विधान है। शिव जी की पूजा में गंगा जल, सामान्य जल, दूध, दही, चीनी, घी, शहद, पंचामृत, वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन, भस्म, अक्षत, फूल, विल्व पत्र, दूर्वा, ऋतुफल, विजया, आक, धतूरा, लौंग, इलायची, पान, धूप, दीप, नारियल एवं मिष्ठान्न के प्रयोग का विधान है।

भगवान् शिव पर अभिषेक किसी वेद पाठी ब्राह्मण से कराने से शिव कृपा अति शीघ्र प्राप्त होती है तथा साधक की मनोभिलाषित कामना की सिद्धि होती है।

इस माह (जुलाई) में पड़ने वाले व्रत एवं त्यौहारों की तालिका इस प्रकार है।

क्रमांक व्रत एवं पर्व का नाम	मास	पक्ष	तिथि	दिनांक
1. आषाढ अमावस्या	आषाढ	कृष्ण	अमावस्या	01.07.2011
2. रथ यात्रा द्वितीया	आषाढ	शुक्ल	द्वितीया	03.07.2011
3. वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत	आषाढ	शुक्ल	तृतीया	04.07.2011
4. भौमवती चतुर्थी पर्व	आषाढ	शुक्ल	चतुर्थी	05.07.2011
5. श्री स्कन्द षष्ठी व्रत कर्दम षष्ठी	आषाढ	शुक्ल	षष्ठी	06.07.2011
6. सोमपदा दशमी	आषाढ	शुक्ल	दशमी	10.07.2011
7. श्री विष्णु शयनी एकादशी	आषाढ	शुक्ल	एकादशी	11.07.2011
8. भौम प्रदोष व्रत	आषाढ	शुक्ल	द्वादशी	12.07.2011
9. आषाढ पूर्णिमा	आषाढ	शुक्ल	चतुर्दशी	14.07.2011
10. गुरु पूर्णिमा	आषाढ	शुक्ल	पूर्णिमा	15.07.2011
11. नित्य नैमित्तिक पार्थिवार्चन प्रारम्भ	आषाढ	शुक्ल	प्रतिपदा	16.07.2011
12. संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत	श्रावण	शुक्ल	तृतीया	18.07.2011
13. भौम व्रत	श्रावण	कृष्ण	चतुर्थी	19.07.2011
14. कालाष्टमी व्रत	श्रावण	कृष्ण	अष्टमी	23.07.2011
15. कामदा एकादशी व्रत	श्रावण	कृष्ण	एकादशी	26.07.2011
16. प्रदोष व्रत	श्रावण	कृष्ण	त्रयोदशी	28.07.2011
17. मास शिव रात्रि व्रत	श्रावण	कृष्ण	चतुर्दशी	29.07.2011
18. श्रावण अमावस्या	श्रावण	कृष्ण	अमावस्या	30.07.2011

**पंचक-** 17 जुलाई दिन रविवार के रात्रि में 11 बजकर 18 मिनट से प्रारम्भ होकर 22 जुलाई दिन शुक्रवार को रात्रि 9 बजकर 30 मिनट पर समाप्त होगा।

**मास प्रभाव-** इस माह में खाद्यान्न पदार्थों का मूल्य सामान्य रहेगा। कहीं-कहीं साधारण वर्षा होगी। खण्ड वृष्टि के कारण कहीं-कहीं सूखे का प्रभाव दिखाई पड़ेगा। माह के पूर्वार्द्ध में सराफा बाजार में सामान्य सस्ती आयेगी। पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़ एवं वृष्टि के कारण जन-धन की हानि होगी, श्वेत पदार्थ महंगे होंगे।

इन अनेकानेक नकारात्मक प्रवृत्तियों के निवारण के लिये महर्षि भावातीत ध्यान साधना एवं महर्षि यज्ञ अनुष्ठान का आश्रय लेना श्रेयस्कर रहेगा।



# PHOTO GALLERY



Students of Maharishi Vidya Mandir Indore performing group dance on the occasion MP Air Squadron NCC programme.



Students of Maharishi Vidya Mandir Indore during MP Air Squadron NCC programme.



Mrs. Sandra Chando and Mrs. Kenena Pelfrey from United State of America, are attending the morning assembly of the MVM-1 Guwahati.



Mrs. Chando & Mrs. Pelfrey are inaugurating the School Annual Exhibition 2011



Smt. Anita Mankotia, Principal MVM Dharamshala, addressing to staff and students on new academic session 2011-12.

# Maharishi Movement Global News

## **Enjoying school? Transcendental Meditation helps students learn and enjoy the process**

Students at Maharishi School in England describe how practicing the Transcendental Meditation Technique helps them succeed in their studies and enjoy learning. ‘I really like the lessons in the Maharishi School because everyone is so focused and alert, and ready to learn,’ said one student. When the students have fresh, receptive minds, ‘the teachers can give you involving, fun, and great work that you can really get into.’

## **Spring Maharishi Gandharva Veda Music Festival held in Holland**

The Spring Maharishi Gandharva Veda Music Festival, held 25 April at a grand hall in Roermond, Holland, attracted a full audience from the local community as well as practitioners of the Transcendental Meditation Programme. The concert was a great success, featuring accomplished artists including the legendary Hari Prasad Chaurasia and 18-year-old pianist Utsav Lal, who has pioneered the piano as the vehicle for the classical Raga. ‘It was a rare privilege to experience these world famous musicians giving their utmost—their innermost bliss—in the form of such beautiful sounds,’ a member of the audience commented.

## **Education solutions: A new paradigm offers outstanding educational outcomes by Global Good News staff writer**

The Excellence in Action page of Global Good News is featuring this article with colourful photos. Please click on the following link to read more about ‘Education Solutions: A new paradigm offers outstanding educational outcomes’.

Featured is an article in the Indian Weekender, published in New Zealand, reporting on a new paradigm in education known as Consciousness-Based Education, which has been established in over 200 schools in India as well as in schools in countries throughout the world.

Consciousness-Based Education is ‘a legacy of Vedic scholar Maharishi Mahesh Yogi, who actively promoted education for enlightenment—full inner development of each individual,’ the Indian Weekender explains.

The curriculum includes not only the traditional academic disciplines—science, social studies, language, arts, mathematics—but adds an element that has been missing in education: development of consciousness, which forms the very basis of the learning process, and which is provided through the Transcendental Meditation Technique.

Students and staff at Consciousness-Based schools practice the Transcendental Meditation Technique for about 15-20 minutes at the beginning and end of their school day. The Indian Weekender reports that ‘the students gain a natural orderliness and coherence; they become more receptive to knowledge; they exhibit greater alertness; and they radiate bliss and friendliness to their classmates and their teachers.’

---



## **India: Expansion of Maharishi Vedic Pandit groups, Consciousness-Based Education**

The Maharishi Vedic Pandit programme in the centre of India has expanded rapidly in recent years, increasing the effect of invincible peace and progress in collective consciousness created by the Pandits' practice of Maharishi's technologies of consciousness. Consciousness-Based Education initiatives are being launched in the vicinity of the Vedic Pandit groups, including a large university with thousands of students practising Transcendental Meditation, who are also contributing to rising coherence and peace for their nation and the world.

## **India: Maharishi School students excel**

Students at Maharishi Invincibility Schools in India are winning many competitions, including those in science, mathematics, music, and sports. Over 30,000 press articles on the schools have been collected, detailing these successes.

These successes are largely due to the students' practice of Transcendental Meditation and its advanced programmes, which facilitate the development of total brain functioning, said Dr Girish Chandra Varma, Chairman of Maharishi Schools in India.

## **New Campus at Brahmsthan of India**

In the centre of India, a new campus is in final stages of construction, which will host visitors from around the world participating in special World Peace Assemblies. The purpose of the assemblies is to create an effect of coherence, harmony, and peace in world consciousness through group practice of Transcendental Meditation and the advanced Transcendental Meditation Sidhi Programme, including Yogic Flying.

The campus already has four buildings with 88 rooms, and will be completed by the time the World Peace Assemblies commence in October.

The campus features a quiet pastoral setting, with 10,000 fruit trees in its vicinity. Planning is underway to farm 1,000 acres in the campus area to produce organic food for guests and residents.

## **Education solutions: A new paradigm offers outstanding educational outcomes**

Schools around the world are successfully employing the system of Consciousness-Based Education with very positive results for students, teachers, and parents.

## **Germany: University to conduct research utilizing Transcendental Meditation**

A large university in Germany is interested in doing health-related research involving the Transcendental Meditation Technique. Extensive scientific research has been conducted on the Transcendental Meditation Programme at hundreds of universities and research institutes around the world; this is the first research in Germany initiated by the head of a university.

## **A meditation technique that works - every day**

Dr. Randolph Carter, founding director of Eastern Educational Resource Collaborative, describes how, looking to find inner peace and deeper self-knowledge, he learned Transcendental Meditation as a

---



college student in the tumultuous late 1960s. He went on to be trained as a Transcendental Meditation teacher in 1971, and taught hundreds of people in the African-American community, as well as at Folsom Prison. 'It's hard to imagine life without meditation. I feel so fortunate to have learned a technique that works,' he says, which has 'transformed lives and created community'.

### **'Meditation promoted for soldiers suffering from PTSD' - CNN**

This past week CNN reported on gala events in New York City and Washington, DC which drew celebrities, scientists, doctors, and huge crowds to promote the use of the Transcendental Meditation Programme as an antidote to the epidemic of post traumatic stress disorder (PTSD) that is afflicting large numbers of military personnel coming back from Iraq and Afghanistan.

### **Transcendental Meditation: Bringing depth to the study of literature**

A retired English professor says that practicing the Transcendental Meditation Technique deepened his experience of literature, giving him insight into the work of great writers including Walt Whitman and Ralph Waldo Emerson. 'It makes you understand what the writers and sages were talking about.'

### **Radio Health Journal interviews WWII veteran about PTSD and Transcendental Meditation**

Radio Health Journal host Reed Pence recently interviewed author and decorated WW II P-51 fighter pilot Jerry Yellin, and Dr David Leffler, Executive Director of the Center for Advanced Military Science, on the topic "Treating and Preventing PTSD in the Armed Forces." Mr Yellin is author of the new book, *The Resilient Warrior: Healing the Hidden Wounds of War* (2011), and co-director of Operation Warrior Wellness, a division of the David Lynch Foundation, which offers the Transcendental Meditation Programme to alleviate PTSD in returning veterans and their families.

### **New research shows higher levels of serotonin in people who practice Transcendental Meditation**

A new study reveals that people who practice the Transcendental Meditation Technique have higher levels of intestinal serotonin production, and that this correlates with reduced anxiety, depression, aggression, and impulsiveness.

### **Into the beyond: Dr Norman Rosenthal and 'Transcendence'**

The Avalon Theatre in Washington, DC, was the setting for a talk on 9 June by eminent psychiatrist Norman Rosenthal, MD, and filmmaker David Lynch about Transcendental Meditation and Dr Rosenthal's new book, *Transcendence: Healing and Transformation Through Transcendental Meditation*.

---

---

# E-Gyan Monthly News Letter

## Reminder

Dear Readers,

I am happy to release this 25<sup>th</sup> edition of E-Gyan Monthly Digital News Letter. Previous editions of E-Gyan have been published and circulated amongst you. In every edition of E-Gyan I am requesting you to send news from your relevant field. But we are not receiving enough news. Please start sending the news in either Hindi or English. **E-Gyan Monthly News Letter** will be released in the first week of every calendar month. E-Gyan matter must be received by 15<sup>th</sup> of every month. Now E-Gyan is also reaching to large number of global leaders of Maharishi Organisation worldwide. If Rajas, Raj Rajeshwaries, Ministers and National Directors want to share any inspiring news of their country, please send in English.

E-Gyan Monthly Digital News Letter will be circulated to all members, employees, well-wishers and students of all Maharishi Organisations in India and also to large number of Meditators, Sidhas, Governors, leaders and devotees of Maharishi Global Organisation.

### **E-Gyan Monthly News Letter contains the following:**

1. Courses currently run by Maharishi schools/colleges/institutions and universities.
2. Information on any new course/programme added in Maharishi schools/colleges/institutions and universities.
3. Present student strength course wise, subject wise, class wise, branch wise in different Maharishi Educational Institutions.
4. Announcement of any new course offering and its schedule with course details and venue.
5. Starting of new building construction, report on Bhumi puja or vastu puja or foundation stone ceremony.
6. Inauguration or graha pravesh or public offering of new building.
7. Special achievement of any Maharishi Organisation.
8. Special achievement of Staff or faculty of any Maharishi Educational Institution.
9. Special achievements or award received by Students in the field of academics, sports, arts, music, culture, language, general knowledge, quiz, talent search or any other competition on district, state, national and international level.
10. Report on NCC, NSS, Scouts, Adventure programme/trip.
11. High-level placement of graduates in national, international or multinational organisations/corporations.
12. Outstanding performance of ex-students.
13. Publication of any paper by Faculty, Students, Staff, research department or Organisation.
14. News coverage in local, state, national level newspapers, TV, radio, website.
15. Selection of students in civil services, IIM, IIT, PMT, IIT, NDA, IMA, IFS, IRS, Armed Force or in any other institution of national importance.
16. List of outstanding government or private special projects taken by the organisation.
17. Launching of new product with details, availability, and price.
18. Details of products already in market.

19. Creative writings on different topics, such as cultural/social and historical issues.
20. Offering Vedic solution to any social problem.
21. Performance of any special Anushthan or Yagyas.
22. Vedic celebration reports.
23. Excursion tour reports.
24. Corporate visit, corporate training etc.
25. Visit of national and international dignitaries and their remarks.
26. Appreciation, recognition or awards received by Maharishi Organisations.
27. Report on academic or commercial collaborations.
28. Report on Maharishi Vedic Organic Agriculture.
29. Report on monthly Initiations in TM, Sidhi course and Advance Techniques.
30. Report on activities of Maharishi Global Movement.
31. Report on any other similar subject or area, which is not covered here but worth reporting.

We invite news, articles and reports from all Maharishi Organisations, leaders, members, faculty, staff, students, meditators, Sidhas and all readers. Please note that all news reports must be authentic, original, true and correct. The writers of articles should send a note that the article is their original article.

Please also note that all contents should be sent in soft copy through email ([egyan@mahaemail.com](mailto:egyan@mahaemail.com) and [egyanmonthly@gmail.com](mailto:egyanmonthly@gmail.com)) as word document file (or in a CD to Dr. T. C. Pathak, Maharishi Centre for Educational Excellence Campus, Building No-5, Lambakheda, Berasia Road, Bhopal, Madhya Pradesh, PIN 462018). Hard copy should be neatly typed (“Times New Roman” font for English and “Devnagri” or “Chanakya” font for Hindi) and should be sent to above-mentioned address. High quality/resolution pictures and graphics will be very useful to make your report better looking and will be much interesting for readers.

Editorial Board of E-Gyan Monthly News Letter will not be responsible for any copyright issues of reports. Once a matter of false reporting comes to the Board, E-Gyan Monthly Newsletter will never publish reports of the sender in future and will inform it’s readers about this.

Please recommend all your friends and relatives to subscribe E-Gyan Monthly Digital News Letter and to visit [www.e-gyan.net](http://www.e-gyan.net) web site.

***With All the Best Wishes in Maharishi’s Forth Year of Invincibility - Global Ram Raj.***

***Jai Guru Dev, Jai Maharishi***

***Dr. T.C. Pathak***  
***For Editorial Board, E-Gyan Newsletter***

***Copyright © 2010 by Maharishi Ved Vigyan Prakashan***

***All rights reserved. No part of E-Gyan Monthly Digital News Letter may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including Photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of Maharishi Ved Vigyan Prakashan.***  
***Maharishi Ved Vigyan Prakashan, Chhan, Bhojpur Temple Road, Post - Misrod, Bhopal, Madhya Pradesh, Phone: +91 755 4087351***